अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : जैनागम स्तोक वारिधि – द्वितीय कक्षा (10 जनवरी, 2016)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. किसी भी प्रकार की नकल नहीं करें एवं किसी से बातचीत का भी प्रयास नहीं करें। इसके अंक काटे जा सकते हैं अथवा परीक्षा निरस्त की जा सकती है।
5. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
6. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	20	18	32	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र. 1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए– 10X1=10

(a) नाम कर्म का अबाधाकाल होता है–

क. 7000 वर्ष ख. 10,000 वर्ष

ग. 3000 वर्ष घ. 2000 वर्ष ( )

(b) वस्तु के विशेष धर्म को जानना कहलाता है–

क. दर्शन ख. चारित्र

ग. ज्ञान घ. विज्ञान ( )

(c) कौनसा कर्म अगुरूलघु गुण को प्रकट नहीं होने देता है।

क. अन्तराय कर्म ख. गोत्र कर्म

ग. ज्ञानावरणीय कर्म घ. मोहनीय कर्म ( )

(d) छठी नरक की गति है–

क. 40 ख. 30

ग. 20 घ. 10 ( )

(e) पृथ्वीकाय के कुल कितने भेद होते हैं?

क. 8 ख. 4

ग. 2 घ. 5 ( )

(f) खेचर कितनी नारकी तक जा सकता है?

क. 1 ख. 2

ग. 3 घ. 4 ( )

(g) मिश्र गुणस्थान में जीव के भेद कितने पाये जाते हैं?

क. 4 ख. 3

ग. 2 घ. 1 ( )

(h) 18 पाप का त्याग क्या है?

क. अरूपी ख. रूपी

ग. दोनों घ. इनमें से कोई नहीं ( )

(i) 7 उपयोग लेकर जाते हैं व 8 उपयोग लेकर निकलते हैं–

क. पहली तीन नारकी ख. पहला देवलोक

ग. मनुष्य घ. तिर्यंच पंचेन्द्रिय ( )

(j) अरूपी द्रव्यों एवं चतुस्पर्शी पुद्गलों में कौनसा भंग पाया जाता है?

क. लघु ख. गुरू

ग. अगुरूलघु घ. सभी ( )

प्र. 2 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर हाँ/ना में दीजिए– 10X1=10

(a) उपयोग का थोकड़ा बाटा बहती अवस्था की अपेक्षा से समझना चाहिए। .....

(b) 5 स्थावर 3 उपयोग लेकर आते हैं व 3 उपयोग लेकर नहीं निकलते हैं। .....

(c) चौस्पर्शी रूपी के 30 भेद होते हैं। .....

(d) 14 वाँ गुणस्थान सलेशी होता है। .....

(e) वासुदेव मरकर मोक्ष में जाते हैं। .....

(f) तेउकाय, वायुकाय पुनः तिर्यंच में ही आते हैं। .....

(g) स्त्री काल करके 7वीं नारकी में नहीं जाती है। .....

(h) मोहनीय कर्म के उदय से शक्ति में बाधा उत्पन्न होती है। .....

(i) 'प्रचला' दर्शनावरणीय कर्म की प्रकृति है। .....

(j) 'साता वेदनीय' कर्म जीव 12 प्रकार से बांधता है। .....

प्र. 3 निम्नलिखित जोड़ियों का मिलान कर सही उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए– 10X1=10

(a) वर्ण	(क) काष्ट का स्तंभ	.....
(b) 5 अनुत्तर विमान	(ख) नरक	.....
(c) वेदनीय कर्म	(ग) 4 शरीर	.....
(d) 7 वाँ गुणस्थान	(घ) 5 वाँ गुणस्थान	.....
(e) अष्टस्पर्शी रूपी	(च) 55	.....
(f) मान	(छ) 3 लेश्या	.....
(g) वासुदेव	(ज) अष्टस्पर्शी स्कन्ध	.....
(h) तिर्यंच पंचेन्द्रिय	(झ) सफेद	.....
(i) 12 योग	(य) निराबाध गुण	.....
(j) दृष्टिगोचर	(र) आठवें देवलोक तक	.....

प्र. 4 मुझे पहचानो– 10X2=20

(a) मेरा वर्णन भगवती सूत्र के 13वें शतक के 1 व 2 के उद्देशक में चलता है। .....

(b) मैं केवलज्ञान को प्राप्त नहीं होने देती हूँ। .....

(c) मेरे पर अनुकम्पा करने से जीव साता वेदनीय का बंध करता है। .....

(d) मेरी आगति व गति समान है। .....

(e) मैं काल करके नियमा देवगति में ही जाता हूँ। .....

(f) मेरे में पर्याप्त जीव ही काल करके आ सकता है, अपर्याप्त नहीं। .....

(g) मेरे में योग व लेश्या दोनों नहीं होते। .....

(h) सिर्फ मुझमें ही जीव के दो भेद पाये जाते हैं। .....

(i) मैं एकांत सम्यग्दृष्टि हूँ जितने उपयोग लेकर आता हूँ उतने ही लेकर निकलता हूँ। .....

(j) मैं अरूपी, चतुस्पर्शी एवं अष्टस्पर्शी तीनों में आ सकता हूँ। .....

प्र. 5 एक दो वाक्यों में उत्तर दीजिए। (कोई नौ) 9X2=18

(a) 10वें गुणस्थान में जीव, गुणस्थान, योग, उपयोग और लेश्या को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

(b) नरकगति के 14 भेदों को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

(c) 6 सहंनन के नाम लिखिए।

.....

.....

.....

(d) देवायु बंध के कौनसे 4 कारण हैं? लिखिए।

.....

.....

.....

(e) तीर्थंकर की आगति गति लिखिए।

.....

.....

.....

(f) दर्शनावरणीय कर्म का उदय कितने प्रकार से होता है? स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

(g) 15 कर्मभूमिज मनुष्यों की आगति गति लिखिए।

.....

.....

.....

(h) नोगर्भज की आगति–गति लिखिए।

.....

.....

.....

(i) 10 वें देवलोक की आगति–गति लिखिए।

.....

.....

.....

(j) मोहनीय कर्म बंध के 6 कारण लिखिए।

.....

.....

.....

प्र. 6 तीन–चार वाक्यों में उत्तर दीजिए– (कोई आठ) 8X4=32

(a) 30 अकर्मभूमि की आगति व गति को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(b) स्पर्श कुल 8 होते हैं पर इनके भेद–2 किये गये हैं चतुस्पर्शी व अष्टस्पर्शी क्यों? कारण सहित स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(c) 5 स्थावर, असन्नी मनुष्य, 1,2,3 नरक के जीव कितने उपयोग लेकर आते व निकलते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

(d) सातों नरक से निकलने वाला जीव क्या–क्या बन सकता है?

.....

.....

.....

.....

.....

(e) कर्मों की स्थिति व अबाधाकाल लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(f) मिथ्यादृष्टि, मिश्रदृष्टि, स्त्रीवेद की आगति–गति स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(g) संज्वलन कषाय की चारों प्रकृतियाँ उदाहरण सहित लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(h) 14 गुणस्थान में योगों की संख्या लिखिए।(गुणस्थानों के नाम लिखने की आवश्यकता नहीं)

.....

.....

.....

.....

.....

(i) गति–आगति के थोकड़े से सम्बन्धित कोई 4 ज्ञातव्य तथ्य पाठ्यपुस्तक के आधार पर लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....